Introduction.

प्रस्तावना

मेरे स्वमतानुसार यह परम सत्य है कि कविता हृदय का संगीत है। यह एक ऐसा गीत है जो जनजन से प्रीत जोड़ता है, जीवन की रीत समझाता है। कविता शब्दों का वह संगीत है, जो शब्दों का पर्व मनाती, भावनाओं को साद्दश्य करती, वेदना का आलेखन करती है। कविता जीवन का वह गीत है जो भावों की रंगोली सजाकर स्नेह का निर्झर बहाती, सृष्टि का रहस्य समझाती हुई ईश्वर तक पहुँचाने का सार्थक प्रयास करती है।

काव्य के प्रति मेरा रूझान बचपन से ही रहा है। संगीत सुनते-सुनते कविता का आलेखन मेंरी कलम करने लगी। हृदय के कोमल, उमड़ते-घुमड़ते विचार, कल्पनाएँ कलम के सहारे कविता बन प्रवाहित हो चले। काव्य का यह सफरनामा मुझे लोकसाहित्य की गहराई में ले चला। कविता के प्रति गहरी अभिरूचि व गहन अध्ययन की उत्कंठा ने मुझे लोकसाहित्य के द्वार पर ला खड़ा किया। मेरी ज्ञान पिपासा व जिज्ञासा का अंत तब हुआ जब मेरी निर्देशिका श्रीमती शैलजा जी ने मेरी रूचि के अनुकूल विषय प्रदान किया जिसका मैंने सहर्ष स्वीकार किया। विषय था - 'राजस्थान और गुजरात के लोकगीतों का सांस्कृतिक दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन।' मेरी मातृभाषा काठियावाड़ी गुजराती है अतएव गुजरात का समृद्ध लोकसाहित्य पढ़कर उसका भाषांतर हिन्दी में करने में कठिनाई न हुई परंतु राजस्थान से संबंधित लोक साहित्य व भाषा मेरे लिए पूर्णतः नवीन चुनौतीपूर्ण कार्य था। प्रारंभ में कठिनाईयों का सामना करना पड़ा परंतु काव्य के प्रति रस के कारण मैं निरंतर विषय की गहराई में पहुँचती गई। अंततः मुझे विषय रोचक प्रतीत हुआ और मैंने अपना शोधकार्य पूर्ण किया।

मेरे प्रस्तुत शोध प्रबंध, 'राजस्थान और गुजरात के लोकगीतों का सांस्कृतिक दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन' में मैंने हमारे लोकवैभव व लोकसंस्कृति को उजागर करने का एक लघु प्रयास किया है। लोक साहित्य एवं लोकगीत हमारी जमीं से जुड़े समाज का अभिन्न हिस्सा है। गुजरात और राजस्थान भौगोलिक दृष्टि से भले ही भिन्न हैं फिर भी उनके साहित्य में भावात्मक, वैचारिक, सामाजिक ऐक्य है। जनमानस दोनों जगह समान रूप से एक-सा है। लोकसाहित्य का अर्थ है लोक का साहित्य। जिसमें संपूर्ण मानव समाज का समावेश हो जाता है। लोकसाहित्य के अंतर्गत लोक की रचनाओं का समावेश होता है। इसमें हमें लोकगीत, लोककथायें, लोकनाटक, लोककहानी आदि का बृहद् विवरण मिलता है। राजस्थानी भाषा का लोक साहित्य अत्यंत समृद्ध है जिसमें हमें लोकसाहित्य की सभी विधाएँ संपुष्ट रूप से प्राप्त होती हैं। राजस्थान की प्राकृतिक विशिष्टताओं की झलक यहाँ के लोक साहित्य में पूर्णतः देखी जा सकती है। उसी प्रकार गुजरात के लोक साहित्य का भी अपना ही एक महत्त्व एवं स्थान है। गुजराती लोक साहित्य की विशद् व्याख्या करते हुए श्री जयमल्ल परमार लिखते हैं - ''लोक साहित्य अर्थात् जिसको किसी की कृति न कहा जा सके, जो श्रृति में हो और लोकमानस के स्वभाव में समावेश होता हो । जिसमें तमाम बोलियों और ऐसी भाषाओं का समावेश होता है, जिसमें लोक का आदि तत्व विद्यमान हो वह। गुजरात का लोकसाहित्य भी विषय वैविध्य के मामले में सबसे आगे हैं। भारत की शायद ही कोई अन्य भाषा गुजराती लोक साहित्य के मुकाबले तुलना में आ सकती है।''

लोक साहित्य के खजाने में लोकगीतों की संख्या अनगिनत है। मौखिक रूप से गाये जानेवाले इन लोकगीतों का स्थान वाचिक परंपरा में सर्वोच्च व महत्त्वपूर्ण है। लोकगीत चाहे किसी भी भाषा के हों, लोक संस्कृति को अभिव्यक्त करनेवाला सशक्त तत्त्व है। ये समग्र संस्कृति के संवाहक हैं। लोकगीत किसी जाति,

समूह और देश की लोक संस्कृति के परिचायक हैं। मनुष्य जीवन के प्रत्येक प्रसंग, जन्म-मरण, मंगनी-विवाह, जनेऊ-मुंडन, पर्व-त्यौहार, हास-परिहास, सुख-दुःख, लोकव्यवहार-प्रथाएँ, रीति-रिवाज, धर्म-कर्म-अध्यात्म, अतीत और वर्तमान के सारे संस्कार लोकगीतों में सहज रूप से मिलते हैं।

लोक में गीत के माध्यम से ही हृदय की बात कहने की परिपाटी अधिक प्रिय रही है। गाना मन की सहज प्रवृत्ति है इसलिए लोकगीत मनुष्य के हृदय का स्पंदन है। लोकगीत अपनी प्रादेशिक संस्कृति को बखूबी उजागर करते हैं। लोकगीतों में सबसे महत्वपूर्ण जीवन की मूल सत्यानुभूति की अभिव्यक्ति का सहज साक्षात्कार होता है। जीवन को अखंडित रूप से देखने की दृष्टि लोकगीतों में जबरदस्त होती है।

लोकगीत लोककंठ की धरोहर है। एक कंठ से दूसरे कंठ, एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचने वाले लोकगीत शब्द और स्वर के दोहराव से संचरित होते हैं। जो उसकी विशेषता है, जिसके कारण नई पीढ़ी सरलता से अपनी स्मृति में गीतों को ग्रहण कर सकती है।

लोकगीतों में व्यक्तिगत की जगह समष्टिगत अभिव्यक्ति होती है। एक लोकगीत पीढ़ियों के खरे अनुभवों से तपकर बनता है, तभी तो उसकी मार्मिकता, काव्यात्मकता, रसोद्रेकता, संगीतात्मकता अधिक सरल, स्पष्ट और व्यापक होती है।

आजकल स्वयं की रचनाओं को पारंपरिक लोकधुनों में ढालकर लोकगीतों का नाम देकर गाये जाने की प्रवृत्ति पनप रही है जो सर्वथा अनुचित है। प्राचीन परंपरागत लोकगीतों की भावभूमि जितनी उच्च, उदार और व्यापक होती है, उतनी किसी तुकबंदी में कहाँ मिल सकती है? आज हमारे अमूल्य पारंपरिक लोकगीतों को उनके मूल रूप और स्वर में सहेजकर रखना हमारा परम उत्तरदायित्व होना चाहिए, वर्ना लोकगीतों की अस्खलित रसगंगा सूखती जा रही है।

अंत में मैं कहना चाहूँगी कि लोकसाहित्य और लोकगीतों पर शोध करने का मेरा सुनहरा स्वप्न शायद परिपूर्ण न हो पाता यदि मुझे मेरे श्रद्धेय गुरुजनों की प्रेरणा, स्नेह व सहर्ष सहकार न मिला होता। मध्ययुगीन कवि कबीर, सूर, तुलसी इत्यादि संतों ने गुरु की अनंत महिमा को निरूपित किया है। कबीरजी की कुछ साखियाँ मैं उद्धृत करना चाहूँगी।

'सतगुरु की महिमा अनंत, अनंत किया उपकार।
लोचन अनंत उघाड़िया, अनंत दिखावण हार॥

xxxx

'गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूँ पाय।
बलिहारी गुरु दियो आपनी, जिन शोधकार्य पूर्ण कराय॥
मम शत शत वंदन का आप सहर्ष करें स्वीकार।

सचमुच, गुरु की महिमा अपरंपार है। गुरु के बगैर ज्ञान की प्राप्ति संभव नहीं। गुरु ही एक सच्चा मार्गदर्शक है जो हमें लक्ष्य को पूर्ण करने में हमारी सहायता करता है। मार्ग में आनेवाली विघ्न-बाधाओं से लड़ने की क्षमता प्रदान करता है। गुरु वह प्रकाशस्तंभ है जो हजारों आँधियों में भी अपनी नैया को मंजिल तक पहुँचाने का कार्य करता है। प्रस्तुत शोध-प्रबंध को संपूर्ण करने में मुझे परम श्रद्धेय डॉ. शैलजा भारद्वाज जी का सचोट मार्गदर्शन, उनका असीम स्नेह तथा प्रोत्साहन प्राप्त होता रहा। शोधकार्य के प्रारंभ में अनेक कठिनाईयाँ आईं परंतु उन्होंने अपने स्नेहिल स्वभाव व सौहार्दपूर्ण व्यवहार तथा ममता की छाँव बिछाकर सदैव मेरा

मार्गदर्शन किया व प्रोत्साहन प्रदान किया। जिनकी मैं सदैव ऋणी रहूँगी। जिनके कारण ही मेरा रोचक विषय अपने मकाम तक बखूबी आसानी से पहुँच पाया। यह अप्रतिम कार्य सिर्फ आप और आप ही के कारण अंजाम तक सफलतापूर्वक पहुँच सका। मेरे जीवन की आकांक्षा को अंजाम तक पहुँचाने में मुझे कदम-कदम पर आपके मार्गदर्शन व कृपा की आवश्यकता पड़ेगी और आप ही मेरी पथप्रदर्शिका बनेंगी। अतः गुरुमाता के चरणों में मेरा कोटि-कोटि वंदन स्वीकार हो।

हिन्दी विभागाध्यक्ष और मेरे प्रिय गुरुवर आदरणीय श्री विष्णु विराट चतुर्वेदी जी जिनसे मैंने एम.ए. तक शिक्षा उनकी छत्रछाया में पाई उनके प्रति भी मैं हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करती हूँ। इनके अतिरिक्त मैं डॉ. अंजु उबाना जी की भी आभारी हूँ जिन्होंने इस शोधकार्य के प्रारंभ में मेरा साहस व धैर्य बढ़ाया, मार्गदर्शन दिया। आगे मैं अपनी पाठशाला बड़ौदा हाईस्कूल की आचार्य श्री श्रीमती सीमा सहस्त्रबुद्धे जी का हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने इस शोधकार्य का बीज मेरे अंतर्मन में बोया, जिनके आशीर्वाद की बदौलत मैं आज पी.एच.डी. का कार्य संपन्न कर सकी। साथ ही मैं श्री दीपेश वोरा तथा श्रीमती हिमाली वोराजी की भी आभारी हूँ जिन्होंने मुझे डॉ. माँ हरेश्वरीदेवीजी से मिलाया और मेरे शोधकार्य में सहायता प्रदान की। आगे मैं इस ग्रंथ को पूर्ण करने में जिन विद्वानों की पुस्तकों से सहायता प्राप्त हुई उन सभी की सदैव ऋणी व कृतज्ञ रहूँगी। सभी विद्वानों के प्रति जिन्होंने प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से सहयोग दिया, सभी के प्रति मैं अपना श्रद्धापूर्वक आभार ज्ञापित करती हूँ।

मेरे पूजनीय माता-पिता के स्नेह, आशीर्वाद एवं प्रोत्साहन का ही सुपरिणाम है कि यह शोधकार्य मैं पूर्ण कर सकी। अतः पूजनीय स्नेहिल माता-पिता के चरणों में मैं नतमस्तक हूँ जिनके चरण धो अमृतपान करुँ तो भी कम है।

इसके अतिरिक्त मैं अपने परिजनों के सहयोग को नहीं भूली। विशेषकर मेरी अनुजा जिज्ञा रावल (रूपा) जो समय-समय पर मुझे इस शोधकार्य को पूर्ण करने का प्रोत्साहन देती रहीं तथा इसके सफलपूर्वक पूर्ण होने की कामना करती रही। मैं अपने जीवनसाथी श्री भावेश भट्ट की भी आभारी हूँ जिन्होंने इसे पूर्ण करने में मेरा सहयोग प्रोत्साहन देकर किया।

मैं श्रीमती हंसा मेहता लायब्रेरी के सभी स्टाफ मेम्बर विशेषकर सुश्री ज्योति भट्ट (दीदी), श्री एम.एम. परमार जी, श्रीमति पल्लवीबहन ब्रह्मभट्ट तथा जीतेशभाई चौधरी जी का भी हृदय से आभार व्यक्त करना चाहूँगी जिन्होंने मेरे विषयानुकूल पुस्तकें, विविध सामग्री उपलब्ध कराकर अपना सहयोग प्रदान किया। इसके साथ ही सेन्ट्रल लायब्रेरी, मांडवी, बड़ौदा स्टाफ के प्रति भी अपना विनीत आभार व्यक्त करती हूँ। इसके अतिरिक्त मैं अपनी परम सखी पामेला लायल की हार्दिक रूप से आभारी हूँ जिसने मेरे इस शोधकार्य को पूर्ण करने में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया। मैं हृदय से आभारी हूँ।

अंत में विद्वानों से मेरा नम्र निवेदन है कि शोध की दिशा में किये गये मेरे इस छोटे-से प्रयास को सहर्ष स्वीकार करें और अज्ञानता में हुई त्रुटियों को छोटी बेटी जान उदार हृदय से क्षमा प्रदान करें।

विनीत

अंजना त्रिवेदी